③

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer Sheet 2020-21

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर : अभ्यास-3 शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	सर्वज्ञ (अनंतज्ञानी
(२)	मनः पर्यव
(३)	धर्म नही है
(४)	स्वदारा मंत्रभेद
(५)	कल्याणकारी
(६)	क्षायोपशमिक
(७)	परमात्मा की पूजा
(८)	प्रतिपाती अवधिज्ञान
(९)	निर्भय
(१०)	द्वारपाल
(११)	दुःखदायी
(१२)	क्षेत्रफल
(१३)	गवालीक
(१४)	दुःस्वप्न
(१५)	भाजक
(१६)	आत्मिक शुध्दि
(१७)	तस्कर प्रयोग
(१८)	तत्काल
(१९)	मलीन
(२०)	अदत्तादान

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	असत्य
(२)	पर्याय
(३)	थाली
(४)	श्री अजितनाथभ.
(५)	तर्जनी
(६)	अपराधों के
(७)	भावस्नान
(८)	शुष्कवाद
(९)	तत्तप्रतिरूपक व्यवहार
(१०)	छोटी अंगुली के जितना
(११)	राजगृही
(१२)	अनुगामी
(१३)	मार्गणा
(१४)	तुरंत सो जाना
(१५)	समाधि
(५)	प्रतिपाती
(६)	श्वासोच्छ्वास
(७)	व्याप्त
(८)	पर्याय
(९)	पूजित
(१०)	प्रतिहारी
(११)	मनुष्यो
(१२)	कल्याणकारी
(१३)	सरलता
(१४)	बहन
(१५)	मेरा
(१६)	दूर रहे हो
(१७)	अभिग्रह
(१८)	ऋजुमति
(१९)	ज्ञातपेड
(२०)	नागकुमार

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	निद्रा
(२)	तीन गाउ
(३)	दिजीए
(४)	जाति

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	१
(२)	५	(७)	3
(३)	९	(८)	८
(४)	10	(९)	४
(५)	2	(१०)	६

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	30दिन (एक मास)
(२)	2000 धनुष्य
(३)	२८
(४)	६2
(५)	2
(६)	१८०००
(७)	९० अंगुल
(८)	२८ वर्ष
(९)	3६20
(१०)	3,9६,226 योजन

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	92
(२)	✓	(२)	6
(३)	×	(३)	98
(४)	×	(४)	3
(५)	✓	(५)	20
(६)	×	(६)	99
(७)	✓	(७)	६
(८)	×	(८)	93
(९)	✓	(९)	२
(१०)	✓	(१०)	96

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	कुल गुण
20	15	9½	10	10	10	10	15	99½

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. पांच प्रकार के असत्य → ① कन्यालीक – जो निर्दोष कन्या हो उसे सदोष कहे और सदोष कन्या हो उसे निर्दोष कहे और अन्य भी द्विपद के बारे में झूठ बोलना वो सब इसमें आता है। ② गवालीक – थोड़ा दुध देनेवाली गाय को बहुत दुध देनेवाली बताना और बहुत दुध देनेवाली गाय को कम दुध देनेवाली बताना इसीतरह अन्य भी चतुष्पद के बारे में झूठ बोलना यह सब इसके अन्तर्गत आता है ③ भुम्यालिक – भूमि संबंधित झूठ बोलना, पराई भूमी को खुदकी बताना तथा द्रव्यादिक संबंध में झूठ बोलना ④ न्यासापहार → अमानत संबंधित झूठ, पराई वस्तु अमानत रूप में रखकर बाद में उसका अपहरण करना कि मैंने अमानत रखी ही नहीं है। ⑤ झूठी साक्षी – द्वेष से अथवा रिश्वत लेकर गलत साक्षी देना। विश्वासघात करना। झूठा झगड़ा करना।

२. अग्निभूति को कर्म है या नहीं ? ऐसी शंका मन में दृढ़ हो गयी थी। कर्म नाम की कोई सत्ता है ही नहीं। तब वीर प्रभु ने उनके चित्त में रहे हुए संदेह को प्रकट करते हुए कहा की तुझे ऐसा संदेह है और वो वेद पदों से हुआ है। कर्म के बिना एक सुखी, एक दुःखी, एक सेठ, एक राजा, दुसरा रंक वगैरह प्रत्यक्ष नजर आता विरोधपना जगत में कैसे संभव है। इस तरह प्रभु के अमृतमय वचनों से उनका संशय दूर होने से उनका अभिमान दूर हो गया। अग्निभूति विनयभाव से झुक गये। वीर प्रभु के पास अपने पांचसौ शिष्यों के साथ दिक्षा ग्रहण करली।

३. अरति तथा रतिरूप अंधकार से रहित, जरामरण से वर्जित, सुरविमानीक, असुर/भवनपति, सुवर्णकुमार, नागकुमार देवताओं के पति ऐसे इन्द्रो द्वारा प्रमाण किये गये तथा नैगमादिक नय की प्रतीति में निपुण अभय करनेवाले और मनुष्यों तथा देवताओं द्वारा पूजित भी अजित भगवान का शरण पाकर हमेशा उनके समीप मैं उन्हे प्रणाम करता हुँ

४. अनुगामी → जहाँ अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ हो वहाँ से अन्य जगह जाने पर भी वह चक्षु के समान साथही रहता है वह अनुगामी। ② ~~अननुगामी~~ – हियमान → उत्पन्न हो तब शुभ परिणाम के कारण ज्यादा हो परंतु अशुभ - अशुद्ध अध्यवसायों के कारण लगातार घटता जाये वह हियमान अवधिज्ञान है ③ अप्रतिपाती → संपूर्ण लोक को देखे, अलोक के एक प्रदेश को देखे, जो आने के पश्चात जाए नहि वह अप्रतिपाती अवधिज्ञान कहलाता है।

५. ध्यानरूप जल से जीव को जो सदा शुद्धि का कारण बने और जिसका आश्रय लेकर कर्मरूपी मैल धोया जाय उसे भावस्नान कहते हैं। द्रव्यस्नान करने के बाद भावस्नान का लक्ष्य चुक गये तो आत्मिक शुद्धि नहीं पा सकते। द्रव्यस्नान कर परमात्मा की द्रव्यपूजा करते करते भाव की विशुद्धि पायें जिससे अनादि के मोह के संस्कार पतले हो, आंशिक वीतरागता प्रकटे और कर्मरूपी मैल दूर होकर आत्मा निर्मल बने।